

The Importance of Negative Thinking	निषेधात्मक सोच का महत्त्व
<p>1 I think almost all serious people must have thought a great deal about the necessity of bringing about a radical change in the quality of the mind. We see, as things are in the world, that there is no fundamental alteration or change in the human mind. Of course, through pressure, economic and social, through various forms of religious fear, through new inventions and so on, there is change, but this change is always peripheral, on the outside, and obviously such change does not bring about a deep, radical change in the quality of the mind. You must have noticed that society always follows a pattern, certain formulas, in the same way as every individual follows certain concepts, ideals, always moving within the pattern. You must have noticed it not only in yourself and in society but in all our relationships, and you must have wondered how to bring about a deep, lasting, integrated change, so that the interaction between the outer and the inner does not bring about corruption. I do not mean anything mysterious by the 'inner'. It is the inner quality of the mind that I am talking about, not inward things which the mind imagines and speculates about. All society, all human existence is a matter of this interrelationship between the outer and the inner which is constantly fluctuating and always modifying. And if I may, I would like to talk about the possibility of a radical</p>	<p>मेरे विचार से सभी गंभीर लोगों ने इस बारे में खूब अच्छे से सोचा होगा कि मन की गुणवत्ता में मूलभूत परिवर्तन कैसे लाया जाए। जैसी कि स्थिति इस दुनिया में है, हम देख सकते हैं कि मानव मन में कोई मूलभूत एकांतरण या परिवर्तन नहीं हुआ है। आर्थिक और सामाजिक दबाव के कारण, कई तरह के धार्मिक भयों के ज़रिये, नए आविष्कारों आदि के ज़रिये अवश्य ही बदलाव हुआ है, पर यह बदलाव हमेशा बस परिधि पर ही रहता है, बाहर-बाहर, और इससे मन की गुणवत्ता में कोई गहरा, मूलभूत परिवर्तन नहीं आता। आपने ज़रूर गौर किया होगा कि समाज हमेशा एक ढर्रे पर, किसी खास तरह के नुस्खों पर चलता है। इसी तरह हरेक व्यक्ति भी कुछ धारणाओं, आदर्शों का अनुकरण करता हुआ एक लीक पर चलता है।</p> <p>आपने सिर्फ अपने भीतर और समाज में ही नहीं, बल्कि हमारे सभी सम्बन्धों में भी यही देखा होगा। आपने सवाल किया होगा कि कैसे एक गहरा, स्थायी और समन्वित परिवर्तन लाया जाए, जिससे वाह्य और आंतरिक के बीच के आपसी सम्बन्ध भ्रष्टाचार का कारण न बन जाएँ। आंतरिक शब्द से मेरा मतलब ऐसा कुछ नहीं जो रहस्यमय हो।</p> <p>मैं मन की आंतरिक गुणवत्ता के बारे में बात कर रहा हूँ, न कि उन भीतरी चीज़ों के बारे में जिनकी मन कल्पना करता है, और जिनके बारे में अटकलें लगाता है। पूरा समाज, समूचा मानव अस्तित्व वाह्य और आंतरिक के बीच के अंतर्संबंध का ही मामला है, और यह लगातार संशोधित होता रहता है, इसमें उतार-चढ़ाव आता रहता है। यदि आप अनुमति दें तो मैं आमूल परिवर्तन की बात करना चाहूँगा, क्योंकि मुझे लगता है कि यह बहुत ही महत्वपूर्ण है। जो भी हो,</p>

<p>change because I think it is very important. After all, we are social entities and we must live by action. Life is action. One cannot just sit and speculate, neither can one merely carry on with the corruption because, as we know, it only breeds contradiction within ourselves and everlasting torture and struggle. So how is the mind to change? How is there to be a radical change in the total consciousness, not only on the upper levels of the mind but also at the deeper levels, and not along a set pattern? Following a pattern is not a change at all; it is merely a modified continuity of what has been. How is one to really change the quality, the substance of one's consciousness, totally? I do not know if you have thought about it, or are you merely concerned with outward changes which are brought about by every form of social and economic revolution, every new invention? If we are concerned with a total change of consciousness, of the quality of the mind, then I think we must think negatively because negative thinking is the highest form of thinking, not the so-called positive thinking. The positive is merely the pursuit of a formula, a conclusion and all such thinking is limited, conditioned.</p>	<p>हम हैं तो सामाजिक इकाइयां ही और हमें कर्म करते हुए ही जीना है। जीवन क्रियाशीलता है और कोई सिर्फ बैठे-बैठे अटकलें नहीं लगाता रह सकता, न ही कोई भ्रष्टाचार के साथ लगातार जी सकता है, क्योंकि, जैसा कि हम जानते हैं, यह सिर्फ हमारे भीतर विरोधाभास को ही जन्म देता है और इससे उपजती हैं अनवरत यातना और जद्दोजहद। तो फिर मन कैसे बदले? सम्पूर्ण चेतना में आमूल परिवर्तन कैसे हो सकता है, सिर्फ मन के ऊपरी तलों में नहीं, बल्कि गहरे स्तर पर भी, और यह किसी बंधे-बंधाये ढर्रे के अनुसार भी नहीं होने वाला। किसी ढर्रे का अनुगमन बिलकुल भी परिवर्तन नहीं, यह तो बस जो हो चुका है उसी की संशोधित निरंतरता है। कोई वास्तव में अपनी चेतना की गुणवत्ता, उसके सार को पूरी तरह कैसे बदले? मैं नहीं जानता कि आपने इस बारे में सोचा है या नहीं, या फिर आपको सिर्फ बाहरी परिवर्तनों की ही चिंता है, जो कि प्रत्येक सामाजिक और आर्थिक क्रांति या हरेक नई खोज के ज़रिए लाये जाते हैं। यदि हमें मन की गुणवत्ता, चेतना के सम्पूर्ण परिवर्तन की चिंता है, तो हमें नकारात्मक तरीके से सोचना होगा, क्योंकि नकारात्मक सोच ही चिन्तन का सर्वोच्च रूप है, न कि तथाकथित सकारात्मक सोच। सकारात्मक तो किसी खास नुस्खे की, निष्कर्ष की तलाश भर है, और ऐसी कोई भी सोच सीमित है, बंधी हुई है।</p>
<p>2 I hope you are listening rather than just hearing because I want to go into something rather difficult, if I can, and I hope we shall be able to proceed with it together. But if you are merely hearing and not listening, then you will be</p>	<p>आशा है कि आप श्रवण कर रहे हैं, सिर्फ सुन भर नहीं रहे। क्योंकि यदि मुमकिन हो पाया तो मैं किसी मामले की पड़ताल करना चाहूँगा, और मुझे उम्मीद है कि हम यह कार्य साथ में मिलकर कर सकेंगे। पर यदि आप सिर्फ सतही तौर पर सुन रहे हैं,</p>

caught at the verbal level and words then become over-significant. Words are only the means of communicating something. So I hope you are going to listen without any desire to understand mere ideas. I have no ideas because I think they are the most stupid things; they have no substance, no reality, they are just words. So I hope you are listening in the sense of trying to see the problem, just to see it, not to struggle to understand it or resolve it, but to see this extraordinary complex problem which we have - the problem of bringing about a total change in consciousness, in the mind. As I was saying, negative thinking is the highest form of thinking. We never think negatively; we think only positively. That is, we think from a conclusion to a conclusion, from a pattern to a pattern, from a system to a system. That I must be this, I must acquire some virtue, follow this or that path, do certain disciplines. The positive thinking is always in the grooves of our own conditioned thinking - I hope you are watching your own mind, your own thought - , and that way only leads to further limitation of the mind, to narrowness of the mind, to pettiness of action; it always strengthens the self-centred activity. Negative thinking is something entirely different, but it is not the opposite of positive thinking. If I can understand the limitations of positive thinking, which invariably leads to self-centred activity, if I can understand not only

गहराई से नहीं, तो आप शब्दों में फंस जायेंगे और तब शब्द जरूरत से ज्यादा महत्वपूर्ण हो जायेंगे। शब्द सिर्फ कुछ संप्रेषित करने का माध्यम हैं। मेरी आशा है कि सिर्फ धारणाओं को समझने की इच्छा से नहीं सुनेंगे। मेरी कोई धारणाएं नहीं, क्योंकि मुझे लगता है कि वे बहुत ही बेहूदा होती हैं। उनमें कोई सार नहीं होता, कोई वास्तविकता नहीं होती; वे कोरे शब्द होते हैं। मैं उम्मीद करता हूँ कि आप समस्या को देखने-परखने के अर्थ में सुन रहे हैं, इसे समझने या सुलझाने के लिए संघर्ष नहीं कर रहे, बल्कि इस विराट समस्या को जो हमारे सामने है देख पा रहे हैं, कि कैसे चेतना में, मन में एक आमूल परिवर्तन लाया जाए। जैसा कि मैं कह रहा था कि नकारात्मक सोच ही सोच का सर्वोच्च रूप है। हम नकारात्मक-निषेधात्मक तौर पर कभी नहीं सोचते, सिर्फ विध्यात्मक तरीके से सोचते हैं। इसका अर्थ यह है कि हम एक निष्कर्ष से दूसरे निष्कर्ष, एक ढर्रे से दूसरे ढर्रे, एक पद्धति से दूसरी पद्धति की दिशा में सोचते हैं। सोचते हैं कि मुझे ऐसा होना ही चाहिए, मुझे कोई सद्गुण प्राप्त करना ही चाहिए, मुझे इस रास्ते या उस रास्ते पर चलना चाहिए, किसी अनुशासन को मानना चाहिए। विध्यात्मक सोच, पोज़िटिव थिंकिंग, हमेशा अपनी ही संस्कारबद्ध सोच के खांचों के भीतर चलती है। मुझे उम्मीद है कि आप अपने मन को निहार रहे हैं, अपने विचार को देख रहे हैं। यह रास्ता मन को, पहले से अधिक सीमित, संकुचित कर देता है, यह कर्म को क्षुद्र कर देता है, और आत्मकेंद्रित गतिविधि का कारण बनता है। यदि मैं मात्र शाब्दिक तौर पर नहीं, बल्कि मानवीय सोच की समूची प्रक्रिया के रूप में इसे समझ सकूँ, तो ही निषेधात्मक सोच में एक नयी जागृति की संभावना बनती है।

<p>verbally, intellectually but as the whole process of human thinking, then there is a new awakening in negative thinking.</p>	
<p>3 Most of us are attached to something - to property, to a person, an idea, a belief, an experience - are we not? You are attached to your family, your good name, your profession, your guru, to this and that. Now, this attachment invariably breeds suffering and conflict because the thing to which you are attached is constantly changing, obviously. But you do not want the change; you want to hold on to it permanently. So, being aware that attachment breeds sorrow, grief, pain, you try to cultivate detachment. Obviously both attachment and the cultivation of detachment are positive ways of thinking. Detachment is not the negation of attachment, it is merely attachment continued under a different verbal garb. The mental process is entirely the same, if you have ever noticed it. For instance, I am attached to my wife. In that there is pain, struggle, jealousy, frustration, and to escape from all that, I say I must be detached, I must love in an impersonal manner - whatever that may mean - I must love without limitation, and I try to cultivate detachment. But the centre of my activity in attachment or detachment is exactly the same thing. So, our thinking which we call positive is a conflict of the opposites or an endeavour to escape into a synthesis which again creates an opposite. Take</p>	<p>३. हममें से अधिकांश लोग किसी न किसी चीज के साथ लगाव रखते हैं। संपत्ति के साथ, व्यक्ति, विचारधारा, मत, अनुभव वगैरह के साथ हमारा लगाव होता है। नहीं क्या? आप अपने परिवार के साथ जुड़े हुए हैं, अपनी ख्याति, अपने पेशे, अपने गुरु वगैरह के साथ जुड़े हुए हैं। यह लगाव आवश्यक रूप से दुःख और क्लेश को जन्म देता है क्योंकि आप जिस किसी से भी जुड़े होते हैं, जाहिर है वह लगातार बदलता रहता है। पर आप बदलना नहीं चाहते, आप स्थायी तौर पर उसके साथ चिपक कर रहना चाहते हैं। तो जब आप इसके प्रति सजग होते हैं कि लगाव से दुःख, पीड़ा, दर्द का जन्म होता है तो आप अनासक्ति पैदा करने की कोशिश करते हैं। साफ है कि आसक्ति और अनासक्ति का संवर्धन, दोनों ही विध्यात्मक सोच के तरीके हैं। अनासक्ति आसक्ति का नकार नहीं है, यह तो आसक्ति की निरंतरता ही है, बस एक अलग शाब्दिक आवरण में। यदि आपने कभी गौर किया हो, तो मानसिक प्रक्रिया पूरी तरह एक ही है। उदाहरण के लिए, मेरा अपनी पत्नी के साथ लगाव है। इस लगाव में दर्द है, संघर्ष, ईर्ष्या, कुंठा है, और इन सभी से दूर भागने के लिए मैं कहता हूँ कि मुझमें अनासक्ति होनी चाहिए। मुझे बगैर किसी सीमा के प्रेम करना चाहिए, मुझे बिलकुल अवैयक्तिक रूप से प्रेम करना चाहिए, अब उसका अर्थ चाहे कुछ भी हो, मुझे किसी भी सीमा से बंधे बगैर प्रेम करना चाहिए, और फिर मैं अनासक्ति पैदा करने की कोशिश करता हूँ। पर आसक्ति में और अनासक्ति में हमारी गतिविधियों का केंद्र एक ही होता है। तो हमारी जिस सोच को हम</p>

<p>Communism, it is the antithesis of Capitalism, and eventually through struggle the Communists hope to create a synthesis, but because it is born of the conflict of opposites that synthesis is going to create another antithesis. And this process is what we call positive thinking, not only outwardly, socially, but inwardly also.</p>	<p>विध्यात्मक-सकारात्मक कहते हैं, वह विपरीत स्थितियों के बीच एक द्वंद्व है। या फिर यह एक संश्लेषण की ओर पलायन है जो फिर से अपना विपरीत स्वयं ही निर्मित कर लेता है। कम्युनिज्म का उदाहरण लें। यह पूँजीवाद का विलोम है और कम्युनिज्म की उम्मीद है कि आखिरकार संघर्ष के ज़रिये वे एक संश्लेषण का निर्माण कर देंगे, पर चूँकि यह विपरीत गुणों के द्वंद्व से निर्मित हुआ है, यह संश्लेषण फिर से एक विलोम का निर्माण कर डालेगा। और इसी प्रक्रिया को हम सकारात्मक सोच कहते हैं। सिर्फ वाह्य, सामाजिक तौर पर नहीं, बल्कि आंतरिक स्तर पर भी।</p>
<p>4 Now if one understands the total process of all this, not only intellectually but actually, then we will see that a new way of thinking comes into being. It is a negative process unrelated to the positive. The positive way of thinking leads to immaturity, to a mind that is conditioned, shaped, and that is exactly what is happening with all of us. When you say you want to be happy, you want Truth, God, to create a different world, it is always in terms of the positive, which is to follow a system that will produce the desired result, and the result is always the known and it becomes again the cause. Cause and effect are not two different things. The effect of today will be the cause of tomorrow. There is no cause, isolated, which produces an effect; they are interrelated. There is no such thing as a law of cause and effect, which means that there is really no such thing as what we call karma. To us, karma</p>	<p>४. अब यदि कोई इन सभी की समूची प्रक्रिया को समझ लेता है, सिर्फ बौद्धिक तौर पर नहीं, बल्कि वास्तव में, तो एक नयी तरह की सोच जन्म लेगी। यह एक निषेधात्मक प्रक्रिया है जिसका विध्यात्मक या सकारात्मक के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। विध्यात्मक तरीका अपरिपक्वता का कारण बनता है, यह एक ऐसे मन का कारण बनता है जो संस्कारबद्ध है, जिसे आकार दिया गया है। हम सभी के साथ बिलकुल यही हो रहा है। जब आप यह कहते हैं कि आप खुश होना चाहते हैं, आप ईश्वर या सत्य की मांग करते हैं, एक नयी तरह की दुनिया बनाना चाहते हैं, तो यह सब कुछ विध्यात्मक सोच के सन्दर्भ में ही होता है। इसका अर्थ है कि किसी पद्धति का अनुसरण करना जो कि वांछित परिणाम देगी और यह परिणाम हमेशा ज्ञात ही रहेगा और फिर से एक कारण बन जायेगा। कारण और परिणाम दो अलग चीजें नहीं हैं। आज का परिणाम कल का कारण होगा। अलग से कोई ऐसा कारण नहीं जो कोई प्रभाव पैदा करता है, उनका अंतर्संबंध है। कारण और प्रभाव का नियम जैसी कोई वस्तु नहीं है। इसका अर्थ यह है कि तथाकथित कर्म जैसी</p>

<p>means a result with a previous cause, but in the interval between the effect and the cause there has been time. In that time there has been a tremendous lot of change and therefore the effect is never the same. And the effect is going to produce another cause which will never be merely the result of the effect. Do not say, 'I do not believe in karma', that is not the point at all. Karma means, very simply, action and the result, with its further cause. Sow a mango seed and it is bound to produce a mango tree - but the human mind is not like that. The human mind is capable of transformation within itself, immediate comprehension, which is a breaking away from the cause, always.</p>	<p>कोई वस्तु नहीं है। हमारे लिए कर्म का अर्थ है अतीत के किसी कारण का परिणाम। पर परिणाम और कारण के बीच के अंतराल में समय है। उस समय के दौरान कई परिवर्तन हो चुके होते हैं और इसलिए परिणाम कभी भी वही नहीं होता। और साथ ही परिणाम एक और कारण को जन्म देगा जो कभी भी सिर्फ परिणाम का ही प्रभाव नहीं होगा। ऐसा न कहें कि मैं कर्म में विश्वास नहीं रखता', इसका कोई अर्थ है ही नहीं। कर्म का एकदम सरल अर्थ है, क्रिया और परिणाम, और इसके भावी परिणाम। आम का बीज लगायेंगे तो उससे आम का ही वृक्ष पैदा होगा, पर इंसान का मन ऐसा नहीं। मानव मन स्वयं के भीतर परिवर्तन ला सकता है। वह तत्परता के साथ, तुरंत, समझ सकता है, जिसका अर्थ है कारण से हट-कट जाना, हमेशा के लिए।</p>
<p>5 So negative thinking is not thinking in terms of patterns because patterns imply a cause which will produce a result which the mind can manipulate, control and change. With that process we are all very familiar. What I am trying to convey is a negative thinking which has no <b>causation</b>. This may all sound too absurd, but we will go into it and you will see. We will approach it differently.</p>	<p>५. इसलिए निषेधात्मक सोच का अर्थ किसी ढर्रे के अनुसार सोचना नहीं है, क्योंकि ढर्रे का अर्थ है एक कारण जो कि ऐसे किसी परिणाम को जन्म देगा जिसके साथ मन अपने ढंग से खिलवाड़ कर सके, उसे नियंत्रित और परिवर्तित कर सके। इस प्रक्रिया से हम अच्छी तरह परिचित हैं। मैं ऐसी निषेधात्मक सोच की बात कर रहा हूँ जिसमें कोई कारण-परिणाम नहीं है। यह बहुत ही बेतुका लग सकता है, पर हम इसकी पड़ताल करेंगे और तब आप देख पायेंगे। हम इस मामले को अलग तरीके से देखे-समझेंगे।</p>
<p>6 Most of us are discontented, are we not? We are discontented with our job, with our wife, husband, children, neighbours, society or whatever it is. I want position, I want money, I want love. We know all this. Now discontent with something is positive;</p>	<p>६. हमसे अधिकांश असंतुष्ट हैं, हैं न? हम अपनी नौकरी से, बीवी से, पति से, बच्चों, पड़ोसियों, समाज इत्यादि--इन सभी से असंतुष्ट हैं। मुझे पद चाहिए, धन और प्रेम चाहिए। यह सब हम जानते हैं। किसी वस्तु के साथ असंतोष सकारात्मक है, पर अपने आप में असंतोष निषेधात्मक है। मैं</p>

but discontent, in itself, is negative. I will explain. When we are discontented, what is actually taking place? If I am discontented with my job, with myself, what is happening? I want to find contentment, through this or through that. So the discontent is canalized until it finds something which will be satisfactory, and then it fades away. That is what we call positive action, - to find something which will make us happy. But without the flame of real discontent - not discontent with something - life has no meaning. You may have a marvellous job, an extraordinary brain, get degrees and be able to discuss, quote, but your discontent has merely taken the shape of cleverness, and there you are completely sterile. You started with discontent, and at school perhaps you were very good, but as you grew, that discontent became stratified into cleverness or into some form of technique, and there you are satisfied because you feel you have capacity and can function. That again is positive thinking. Whereas negative thinking is just to be in a state of discontent, and such a mind is a very disturbed mind. It is not satisfied and it is not seeking satisfaction because it sees that satisfaction leads only to that positive action which we all seek. To find a way to be satisfied everlastingly means to be dead. And that is what you want; you call it peace of mind and say, 'for God's sake give me some corner in this universe where I can die peacefully'. So

इसका खुलासा करता हूँ। जब हम असंतुष्ट होते हैं, तो वास्तव में क्या होता है? मैं अपनी नौकरी से, स्वयं से असंतुष्ट हूँ, तब क्या होता है? मैं संतुष्टि चाहता हूँ, किसी भी वस्तु के माध्यम से। मैं उस असंतोष को एक संकीर्ण दिशा में मोड़ देता हूँ, जब तक यह कुछ पा न ले और फिर जब उसे कुछ संतोषजनक मिल जाता है, तब वह समाप्त हो जाता है। इसी को हम सकारात्मक क्रिया कहते हैं। ऐसा कुछ पा लेना जो हमें खुश कर दे। पर वास्तविक असंतोष की लौ के बगैर जीवन का कोई अर्थ नहीं, किसी खास वस्तु के साथ असंतोष नहीं, बल्कि अपने आप में ही असंतोष। आपके पास एक शानदार नौकरी हो सकती है, एक असाधारण दिमाग हो सकता है, आप डिग्रियां बटोर सकते हैं और वाद-विवाद कर सकते हैं, लोगों को उद्धृत कर सकते हैं, पर आपके असंतोष ने बस चालाकी का रूप ले लिया है, पर आप पूरी तरह उजाड़, बंजर पड़े हैं। निषेधात्मक सोच की अवस्था का अर्थ है कि बस असंतोष की स्थिति में बने रहना, और ऐसा मन बहुत ही व्यथित मन होता है। वह संतुष्ट नहीं होता और न ही संतोष ढूँढ रहा होता है। क्योंकि वह जानता है कि संतोष सिर्फ सकारात्मक क्रिया की तरफ ले जाएगा और वही तो सब ढूँढ रहे हैं। अनवरत संतोष की राह ढूँढने का अर्थ है मर जाना। और यही आप चाहते हैं। आप इसे मन की शांति का नाम देते हैं और कहते हैं : 'ईश्वर के लिए इस ब्रह्मांड में मुझे ऐसा कोई कोना मुहैया करवा दें, जहाँ मैं शांति से मर सकूँ।' तो सकारात्मक क्रिया हमेशा मौत की तरफ ले जाती है। यदि आप इसे देख पायें, तब आप देखेंगे कि निषेधात्मक सोच हो पा रही है। इसलिए निषेधात्मक सोच कभी किसी निष्कर्ष के साथ शुरू नहीं होती। यह साफ दिख जाता है कि निष्कर्ष आखिरकार ले कहाँ जाते हैं।

<p>the positive action leads always to death. If you can see that, then you will see that a negative way of thinking is taking place. Therefore the negative way of thinking never starts with a conclusion, because one sees where conclusions lead.</p>	
<p>7 So the negative way of thinking is the maintenance, the sustenance of the quality that is discontent - discontent in itself, not with something. Please do not get caught at the verbal level but see the significance of this. But we must understand that positive thinking is conditioned thinking and that there is no change in that; there is modification but no radical transformation. Radical transformation is only in the negative thinking, as we saw in relation to attachment and to discontent. This positive thinking leads only to a dull mind, an insensitive mind, a mind that is not capable of reception, a mind that thinks only in terms of its own security - either the security of the individual or of the family, group or race, which you can observe very clearly in world politics.</p>	<p>७. तो निषेधात्मक सोच इस असंतोष के खालिसपन को कायम रखती है उसे, संजोये रखती है---किसी वस्तु के साथ नहीं, बल्कि अपने आप में जो असंतोष होता है। कृपया शाब्दिक स्तर पर उलझ न जाएँ, बल्कि इसका महत्व समझें। हमें यह ज़रूर समझना चाहिए कि विध्यात्मक-सकारात्मक सोच संस्कारबद्ध होती है और उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता। संशोधन होता है पर कोई मूलभूत परिवर्तन नहीं होता। बुनियादी बदलाव सिर्फ निषेधात्मक सोच में होता है जैसा कि हमने लगाव और असंतोष के सन्दर्भ में देखा। यह सकारात्मक सोच सिर्फ एक मंद मस्तिष्क को जन्म देती है, एक असंवेदनशील मन को, ऐसे मन को जिसमें ग्राह्यता नहीं, ऐसा मन जो सिर्फ अपनी ही सुरक्षा के बारे में सोचता है--या तो व्यक्ति की सुरक्षा या फिर परिवार की, समूह की या फिर नस्ल की। आप वैश्विक राजनीति में इसे बहुत साफ-साफ देख सकते हैं।</p>
<p>8 After all, this earth is ours, yours and mine. This earth which is so marvellous, so beautiful, so rich, is ours to live on happily, without all this fragmentation, without being broken up into different fields called England, Germany, Russia, India. Yet we are battling to keep up the separation. Nobody thinks of this whole world as ours, nobody says, 'let us do something</p>	<p>८. चाहे कुछ भी हो, यह धरती हमारी है। यह धरती जो कि इतनी अद्भुत है, इतनी सुन्दर, इतनी समृद्ध, यह हमारी है ताकि हम इस पर सुख के साथ बसे रहें। बगैर किसी विखंडन के, इंग्लैण्ड, जर्मनी, रूस, भारत नाम के छोटे-छोटे टुकड़ों में बंटे बिना। फिर भी हम इस विभाजन को कायम रखने के लिए जंग कर रहे हैं। कोई नहीं ऐसा जो इस समूची दुनिया को 'हमारा' कहे, कोई नहीं कहता : 'चलो, हम आपस में</p>

<p>together about it'. Instead, we have this fragmentary way of thinking which we call positive, or we pursue some idea of internationalism, which is equally silly. If I can see that, then there is a different approach, a different feeling of the mind, whether it be the Russian or the German or whatever mind it is. Then there is no such thing as the nonsense of patriotism; there is the love of the earth - not your earth and my earth, you cultivating your little field and I cultivating mine, and quarrelling over it, but it is our earth.</p>	<p>मिल कर इसके लिए कुछ करें।' इसकी जगह हम इसी विभाजित ढंग से सोचते हैं और इसे सकारात्मक कहते हैं, या फिर हम अंतर्राष्ट्रीयवाद जैसी किसी विचारधारा के पीछे लग जाते हैं, जो कि उतनी ही मूर्खतापूर्ण है। यदि मैं इसे देख लेता हूँ, तो मेरा तौर-तरीका बदल जाता है। मन में एक अलग किस्म का अहसास होता है, चाहे वह मन रूसी हो या जर्मन या कोई और। तब देशभक्ति की बकवास जैसी कोई चीज़ नहीं होती। धरती के प्रति प्रेम बसता है, आपकी धरती और मेरी धरती नहीं, ऐसा नहीं कि आप अपनी छोटी सी ज़मीन पर खेती करें, और मैं अपनी, और फिर हम उसे लेकर झगड़ा करें। यह हमारी धरती है।</p>
<p>9 Now when we see that this positive way of thinking is destructive, then the negative way comes into being. To think negatively there must be sensitivity, sensitivity both to the beautiful and to the ugly. The man who is pursuing what he calls the beautiful and avoiding the ugly, is not sensitive. The man who pursues virtue without understanding that which is not virtuous, merely avoiding it, is invariably insensitive. Please think this out with me, feel it out and you will see. So appreciation of the beauty of a tree, a leaf, the reflection on still waters, is not sensitivity if you are not also aware of the squalor, the dirt, the way you eat, the way you talk, the way you think, the way of your behaviour.</p>	<p>६. अब जब कोई देख ले कि विध्यात्मक-सकारात्मक सोच का यह तरीका विध्वंसक है, तो निषेधात्मक सोच अस्तित्व में आती है। निषेधात्मक तरीके से सोचने के लिए संवेदनशीलता का होना आवश्यक है---संवेदनशीलता, सौंदर्य और कुरूपता दोनों के प्रति। कोई व्यक्ति यदि उसके पीछे भागता है जिसे वह खूबसूरत मानता है और उससे दूर हटता है जिसे वह बदसूरत मानता है, तो वह संवेदनशील नहीं। सदाचार क्या नहीं है इसे समझे बगैर जो व्यक्ति सदाचार के पीछे भागता है, सिर्फ जो सदाचार नहीं है उससे दूर भागता है, वह संवेदनशील नहीं। कृपया मेरे साथ सोचें, मेरे साथ इसे महसूस करें, और आप खुद देख लेंगे। किसी पेड़, एक पत्ती, शांत पानी पर पड़ते प्रतिबिम्ब की प्रशंसा करना ही संवेदनशीलता नहीं। यदि आप गन्दगी, कचरे, अपने भोजन करने के तरीके, बोलने और सोचने के तरीके, अपने आचरण के प्रति सजग नहीं, तो आप संवेदनशील नहीं।</p>
<p>10 Under this tree it is very beautiful, very quiet, there is lovely shade and</p>	<p>१०. इस पेड़ के नीचे बहुत सौन्दर्य है, बहुत शांति, बहुत प्यारी छाँव और धूप है और</p>

<p>light, and just outside there is that filthy village with all the squalor and dirt and the unfortunate human beings who live there but you are not aware of it. So we are always wanting beauty, truth and God and avoiding the other, and that pursuit is the positive and leads to insensitivity, if we are not aware of the other. And the positive way of erecting buildings for dances, having special schools for dancing, all that business becomes a personal racket, satisfying to the mind that is only thinking positively. Creation is not positive, ever. Creation is the state of mind in which there is no positive action as we know it.</p>	<p>ठीक बाहर एक मैला-कुचौला गाँव है, कचरे और गन्दगी से भरा हुआ, बड़े बदनसीब हैं वे लोग जो वहाँ बसते हैं पर आप इससे बेखबर हैं। हम हमेशा सौन्दर्य, सत्य और ईश्वर की खोज में लगे रहते हैं, और बाकी सभी चीजों से दूर भागते हैं। यह खोज ही विध्यात्मक-सकारात्मक है और यदि हम बाकी सब से अनभिज्ञ रह जाते हैं तो यह असंवेदनशीलता को जन्म देती है। नृत्य के लिए अलग से भवन बनवाना, नृत्य के लिए विशेष स्कूल खोलना, यह सब कारोबार एक बड़ा ही निजी तिकड़म बन कर रह जाता है, विध्यात्मक-सकारात्मक सोच वाले मन के लिए बड़ा ही संतोषजनक। सृजन विध्यात्मक-सकारात्मक नहीं, बिलकुल भी नहीं। सृजन मन की वह दशा है जिसमें कोई विध्यात्मक-सकारात्मक क्रिया है ही नहीं, जिस अर्थ में हम इस शब्द को समझते हैं।</p>
<p>11 So, radical transformation takes place in the mind only when there is this negative thinking. As I said the other day, the thinking that we know of is always in words or symbols. I do not know if you have noticed that there is thinking without words but that thinking is still the result of the positive word. I will explain. You always think in words, symbols, do you not? Please look. The word, the symbol becomes very important to thought. It is the basis of all our thinking; there is association through memory and the memory is a picture, a word, and from that we proceed to think, again in symbols, words. That is all we know, and also if you are very alert, aware, you can see that there is thinking without the word, without the symbol.</p>	<p>99. तो मन में मूलभूत परिवर्तन तभी होता है जब निषेधात्मक सोच होती है। जैसा कि मैंने हाल में ही कहा, जिस सोच से हम परिचित हैं वह हमेशा शब्दों या प्रतीकों में होती है। मुझे नहीं पता कि आपने गौर किया है या नहीं, पर बगैर शब्दों के सोच होती है, पर वह भी विध्यात्मक-सकारात्मक शब्द का ही परिणाम होती है। मैं इसकी व्याख्या करूँगा। आप हमेशा शब्दों और प्रतीकों में सोचते हैं। है न? कृपया देखें इसे। विचार के लिए शब्द और प्रतीक बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। यह हमारी सारी सोच का आधार है स्मृति की संगति होती है और स्मृति है छवि, शब्द और वहीं से हम सोचना शुरू करते हैं, शब्दों और प्रतीकों में। हम यही जानते हैं, और यदि आप बहुत सजग हैं, सतर्क हैं तो आप देखेंगे कि बगैर शब्द के, बगैर प्रतीक के भी सोच का अस्तित्व है। मैं आपको इसका उदाहरण नहीं दूँगा, वरना आप भ्रमित हो जायेंगे। इसलिए कृपया इसके महत्व को समझें, क्योंकि</p>

<p>I am not going to give an example because then you will get lost, so please capture the significance, for negative thinking is not related to thought-with-the-word. Unless you see this you will not see what follows. I am thinking aloud; I have not worked it out at home and then come here to speak it out. So please see this, not merely verbally or speculatively but actually experience that thought functions in words, in symbols and also that thought functions without the word and the symbol. Both these are positive ways of thinking because they are still in the realm of the opposites. Let me put it differently.</p>	<p>निषेधात्मक सोच विचार-शब्द से संबंधित नहीं है। यदि आप इसे नहीं देख पाते, तो आप नहीं समझ पायेंगे कि इसके बाद क्या होगा। मैं इसी क्षण उठ रहे विचारों को व्यक्त कर रहा हूँ, ऐसा नहीं कि मैंने यह सब पहले से सोच रखा है और अब इसे व्यक्त कर रहा हूँ। इसलिए कृपया इसे देखें, सिर्फ शाब्दिक तौर पर और अटकलें लगाते हुए नहीं, बल्कि वास्तव में इसका अनुभव करें, कि विचार शब्दों और प्रतीकों के ज़रिये सक्रिय होता है और यह भी कि विचार शब्दों और प्रतीकों के बगैर भी कार्य करता है। ये दोनों ही सोच के विध्यात्मक-सकारात्मक ढंग हैं क्योंकि अभी भी वे विपरीत के दायरों में काम कर रहे हैं। मैं इसे अलग ढंग से समझाता हूँ।</p>
<p>12 You must have watched your mind how vagrant it is, how it wanders all over the place, one thought pursuing another. When you try to examine one thought, another comes in. So the mind is full of this movement, the agitation of thought. The mind is always occupied with thought. Thought is the instrument of the mind; so the mind is never still. Do not at once say, 'How am I to make the mind still?' That is all too immature, stupid, because it means again a positive following of some pattern. So, realizing the incessant activity of the thought-producing mechanism, through memory, through association, being aware of that, cannot the mind empty itself of this mechanism? Do not ask how, just listen, because understanding is instantaneous, it is not a process which will ultimately get you a mind emptied</p>	<p>१२. आपने जरूर अपने मन को देखा होगा। कैसे बंजारों की तरह रहता है, कैसे हर जगह घूमता रहता है, एक विचार के पीछे दूसरा। जब आप एक विचार का परीक्षण करने की कोशिश करते हैं तो एक और आ जाता है। तो मन हमेशा इस तरह की गतिविधि में फंसा रहता है। विचार मन का उपकरण है। मन कभी भी शांत नहीं रहता। अब अचानक यह न कहें : 'मैं मन को शांत कैसे करूँ?' यह बहुत ही बचकाना और मूर्खतापूर्ण होगा, क्योंकि इसका अर्थ है फिर से किसी ढर्रे का सकारात्मक अनुगमन। तो फिर विचार पैदा करते जाने वाली इस यंत्र की, स्मृति और संगति की अनवरत क्रियाओं को समझ कर, उनके प्रति सजग होकर क्या मन इस उपकरण से स्वयं को मुक्त नहीं कर सकता? कैसे, यह न पूछें। बस सुनें। समझ तात्कालिक होती है, यह कोई प्रक्रिया नहीं जो आखिर में आपको एक रिक्त मन उपलब्ध करा देगी। मन विचार पैदा करता है और उससे नियंत्रित होता है। फिर वही मन खाली होने की कोशिश करता</p>

<p>of thought. If you see the positive, destructive way, - of the mind's activity of producing thought and being controlled by it and then trying to empty the mind - if you can see the falseness or the truth of it, then you will also see that the mind can empty itself of itself, of its limitations, of its ego-centricity, of its self-centred activities. Please go with me a little. The mind is perpetually active, producing and controlling thought. It realizes that, and says, 'I must be quiet', but that generally means quiet through control, which is again positive, destructive and limiting. But you can see if you go a little further that the mind can be emptied of thought, can free itself from the past, not be burdened by the past. It does not mean that memories are not there but they do not shape or control the mind. Now all that is still positive thinking. If you see the falseness of it, the mind will invariably go further, which is, the mind then is not the slave of thought but it can think what it wants. I do not know how to put this. As I said, I am thinking aloud with you and you will have to excuse me if I try different ways of putting it.</p>	<p>है। यदि आप इस विध्यात्मक-सकारात्मक, विध्वंसक तरीके को देख लेते हैं, यदि आप इसके मिथ्या स्वरूप को, इसकी सचाई को देख लेते हैं, तो आप यह भी देख पायेंगे कि मन खुद को खुद से खाली कर सकता है, वह अपनी आत्म-केन्द्रितता, अपनी सीमाओं, अपनी स्व-केन्द्रित हरकतों से खाली हो सकता है। कृपया मेरे साथ थोड़ा चलें। मन लगातार सक्रिय है, विचार को जन्म देता, उनसे नियंत्रित होता। यह इस बात को समझ लेता है और कहता है : 'मुझे शांत रहना ही चाहिए।' पर आम तौर पर इसका अर्थ होता है नियंत्रण के द्वारा शांत होना। फिर से यह वही विध्यात्मक-सकारात्मक, विध्वंसक और सीमित कर देने वाली बात हुई। पर आप थोड़ा और चलें तो आप देख पायेंगे कि मन को विचार से खाली किया जा सकता है, यह खुद को अतीत से मुक्त कर सकता है। अतीत के बोझ तले वह नहीं आएगा। इसका अर्थ यह नहीं कि स्मृतियाँ नहीं होंगीं। हाँ, वे मन को आकार नहीं देंगी, उसे नियंत्रित नहीं करेंगी। पर अभी भी यह सब विध्यात्मक-सकारात्मक सोच ही है। यदि आप इसकी असत्यता को देखते हैं तो मन अवश्य ही और आगे जाएगा। फिर मन विचार का गुलाम नहीं रहेगा और यह वही सोच सकेगा जो यह चाहता है। जैसा कि मैंने कहा, मैं आपके साथ साथ अपनी सोच को व्यक्त कर रहा हूँ और यदि मैं इसे व्यक्त करने के अलग अलग तरीके अपनाऊँ तो आपको मुझे क्षमा करना पड़ेगा।</p>
<p>13 I do not know if you have ever tried to think without being a slave to thought. With most of us the mind is a slave to thought, it pursues thought, contradictory thought and all the rest of it. If you perceive that and empty the mind, it can then think, freed from thoughts associated with memory; and</p>	<p>१३. मुझे नहीं मालूम कि आपने कभी भी विचार का गुलाम हुए बगैर सोचने की कोशिश की है। हममें से अधिकांश के लिए मन विचार का गुलाम है, यह विचार के पीछे भागता है, विरोधाभासी विचार आदि के पीछे। यदि आप यह देखते हैं, और मन को खाली कर देते हैं, तो वह स्मृति के साथ जुड़े विचारों से मुक्त होकर सोच सकता है।</p>

<p>if you go further into it, you will see that the mind which is free - not in the sense of the opposite of slavery, but free in itself - then that mind, emptied of memory, can think in a negative way. Then you will see that the mind, being completely empty of systems, formulas, speculations, thoughts associated with memory, experiences and so on, can perceive that there is a state in which there is action in this world, not from fullness but from emptiness.</p>	<p>यदि आप इस विषय में थोड़ा और आगे चलते हैं, तो आप देखेंगे कि मन जो अपने आप में मुक्त है, स्मृतियों से रिक्त है, वह मन निषेधात्मक तरीके से सोच सकता है। यह सिर्फ गुलामी के विलोम के अर्थ में मुक्त नहीं। तब आप देख पायेंगे कि मन पद्धतियों, नुस्खों, अटकलबाजियों, स्मृति युक्त विचारों, अनुभवों आदि से मुक्त होकर देख पायेगा कि संसार में एक ऐसी भी अवस्था है जिसमें प्रचुरता से नहीं, बल्कि रिक्तता से क्रिया होती है।</p>
<p>14 You see we are acting now with full minds, overcrowded minds, minds that are incessantly active, in contradiction, struggling, adjusting, ambitious, envious, jealous, brutal or gentle and so on. You follow? We are acting on that level. The mind, being full, acts. That action can never produce a new mind, a new quality of mind, a fresh mind, an innocent mind - and it is only such an innocent, fresh mind that can create, that is in a state of creation. The mind sees that, and if the mind can empty itself, then the action that is born out of emptiness is the true positive action, not the other. That is the only true, positive, creative action, because it is born out of emptiness. If you have done any painting, written a poem, a song, you will find the deep feeling comes out of nothingness. But a mind that is crowded can never feel that nothingness and can therefore never be sensitive.</p>	<p>१४. देखें, हम अभी अपने भरे-पूरे, भीड़ भरे मन से क्रिया कर रहे हैं। हमारे मन लगातार क्रियाशील हैं, विरोधाभास में हैं, संघर्ष कर रहे हैं, सामंजस्य में लगे हैं, वे महत्त्वाकांक्षी हैं, क्रूर या सौम्य हैं, उनमें डाह, ईर्ष्या वगैरह है। आप समझ रहे हैं न? हम इसी स्तर पर कार्य कर रहे हैं। मन भरा हुआ है, और वह कार्य करता है। यह क्रिया कभी भी एक नए मन को जन्म नहीं देगी, मन की नयी गुणवत्ता तक, एक तरोताज़ा और मासूम मन तक नहीं ले जायेगी। और एक मासूम, ताज़ा मन ही सृजन कर सकता है, वह सृजन की अवस्था में रह सकता है। मन यह देखता है और यदि मन खुद को खाली कर सके, तब क्रिया उस खालीपन से जन्म लेती है, और वही सच्ची है, न कि दूसरी। मात्र यही सच्ची, विध्यात्मक-सकारात्मक और सृजनात्मक क्रिया है क्योंकि यह खालीपन से जन्मी है। यदि आपने कोई पेंटिंग बनाई है, कविता लिखी है, गीत लिखा है तो आप देखेंगे कि इसकी गहरी भावना शून्य से निकलती है। जो मन भरा हुआ हो, वह इस शून्य का अनुभव कभी नहीं कर सकता और इसलिए कभी भी संवेदनशील नहीं हो सकता।</p>
<p>15 One sees that there can be a radical</p>	<p>१५. यह देखा जा सकता है कि मन की</p>

<p>change in the quality of the mind, which is absolutely necessary now because the present society is a dead society, reforming itself through various forms of anaesthesia and pumping activity into itself. If you as an individual are to change fundamentally, radically, deeply - and therefore change society - then this whole thing that I have described must take place. Then beauty has quite a different significance, as has ugliness, because beauty is not the opposite of the ugly. An ugly face can be beautiful. But such beauty is not conceived by the mind that has avoided ugliness.</p>	<p>गुणवत्ता में आमूल परिवर्तन हो सकता है। अब यह नितांत अवाश्यक है क्योंकि वर्तमान समाज मृत हो चुका है। कई तरह के एनेस्थीसिया (बेहोश करने वाली दवा) के ज़रिये यह जबरन क्रियाशील होकर खुद में सुधार लाने की कोशिश कर रहा है। यदि आप एक व्यक्ति के तौर पर खुद को मूलभूत रूप से, गहराई तक और पूर्ण रूप से बदलना चाहते हैं, और इसके परिणामस्वरूप समाज को भी, तो मैंने जिसे विस्तृत विवरण के साथ समझाया है, वह घटित होगा ही। तब सौन्दर्य का एक अलग ही महत्त्व होगा, और बदसूरती का भी, क्योंकि सुन्दर असुन्दर का विलोम नहीं है। एक बदसूरत चेहरा खूबसूरत बन सकता है, पर इस तरह के सौन्दर्य का अनुभव ऐसे मन को नहीं हो सकता जो बदसूरती से दूर भागता रहा है।</p>
<p>16 So if you have really listened and do not try to do anything about it - because whatever you do will be so-called positive and therefore destructive - then it is enough. It is to see something lovely and leave it alone, not try to capture it, not take it home and smother it by thought.</p>	<p>१६. यदि आपने वास्तव में सुना है और आप इस बारे में कुछ भी करना नहीं चाहते, क्योंकि आप कुछ भी कर लें, यह तथाकथित विध्यात्मक-सकारात्मक ही होगा और इसलिए विध्वंसक भी। इतना ही काफी होगा। जैसे कि किसी सुन्दर वस्तु को देखना और उसे यूं ही छोड़ देना, उसे पकड़ने, घर ले जाने की, विचारों से उसे दबा डालने की कोशिश न करना।</p>
<p>17 If you have seen for yourself, not through my persuasiveness, not through my words, my influence, if you have felt the beauty, the extraordinary quality of the mind that is empty, then from that emptiness there is a new birth.</p>	<p>१७. यदि आपने खुद से यह देख लिया है, मेरे समझाने-बुझाने पर नहीं, मेरे शब्दों के ज़रिये, मेरे प्रभाव के कारण नहीं, यदि आपने स्वयं ही इसके सौन्दर्य को महसूस किया है, रिक्त मन की असाधारण गुणवत्ता का अनुभव किया है, तो उस रिक्तता से एक नया जन्म होगा।</p>
<p>18 It is this new birth which is needed, not the going back to Mahabharata, Ramayana, Marx or Engels, or</p>	<p>१८. इससे नए जन्म की बड़ी आवश्यकता है। वापस रामायण और महाभारत, मार्क्स या एंगेल्स या नवजागरणवाद की ओर लौटने</p>

<p>revivalism. The mind that is really creative is the empty mind, not the blank mind or the mind that merely wishes to be creative. It is only the empty mind that can understand this whole thing - the extraordinary process of thought and thought emptying itself of its own impetus. Then you will see that there is a radical, deep change which is not brought about by influence, circumstances, culture or society. It is that mind which will create a new society. And the moment it creates a new society, that society is already in corruption. All societies are in corruption because that which is created is ever dying. Therefore, recognizing that no society, no tradition, no knowledge is permanent, we can see that the mind which is empty is creative, is in a state of creation.</p>	<p>की कोई ज़रूरत नहीं। जो मन वास्तव में सृजनशील है वह रिक्त मन है, न कि खाली मन। न ही वह मन जो सृजनशील होने की इच्छा रखता है। सिर्फ रिक्त मन ही इस सम्पूर्ण वस्तु को समझ सकता है, विचार की असाधारण प्रक्रिया को और अपनी ही प्रेरणा से खुद के रिक्त हो जाने को। तब आप देखेंगे कि एक गहरा, आमूल परिवर्तन होता है, जो वाह्य प्रभाव, परिस्थिति, संस्कृति या समाज के द्वारा नहीं लाया जाता। ऐसा मन ही एक नए समाज को जन्म देगा। और जैसे ही वह एक नए समाज का निर्माण करेगा, वह समाज भ्रष्ट हो जाएगा। सभी समाज भ्रष्टाचार में डूबे हैं क्योंकि जिसका निर्माण किया जाता है वह हमेशा मरता चला जाता है। यह समझते हुए कि कोई भी समाज, कोई भी परंपरा, कोई भी ज्ञान स्थाई नहीं, हम देख सकते हैं कि जो मन रिक्त है वही सृजनशील है, सृजन की अवस्था में है।</p>
<p>SERIAL NO: VB581112 TITLE: Talk 7, Madras, 12 November 1958 PLACE: Madras DATE: 12-Nov-1958  J. Krishnamurti Madras 7th Public Talk 12th November 1958</p>	<p>१२ नवंबर, १९५८</p>

